thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15
सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 44-45 रोहतक, 28 अप्रैल से 7 मई, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

महर्षि दयानन्द का विश्व के लोगों के लिये सन्देश

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

जो उन्नति करना चाहो तो आर्य-समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा कोई नहीं हो सकता।

महर्षि दयानन्द को क्यों यह जनता को सन्देश देने की आवश्यकता पड़ी कि ''आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।'' क्योंकि जब यह सन्देश विश्व के लोगों को दिया जिसमें विशेष तौर पर आर्यावर्त देश के लोगों को स्मरण कराया कि आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा कोई नहीं हो सकता, जब महर्षि ने यह बात कही उस समय देश में अज्ञानता, अन्धकार, ईश्वर के स्थान पर मूर्ति (पाषाण) की पूजा, देश परतन्त्र, स्त्रियों पर अत्याचार, बाल-विवाह, सतीप्रथा, स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार नहीं, देश में गरीबी से जूझते लोग, अनेक मत-मतान्तर, छुआछूत, वेदों के स्थान पर कुरान, पुराण, बाइबिल आदि का पठन-पाठन आदि-आदि अनेक कुरीतियां घर कर गई थी, जिनके कारण देशवासियों की दुर्दशा को देखकर महर्षि बड़े चिन्तित हुए और इन बुराइयों को जड़ से उखाड़ फैंकने का अभियान चलाया। महर्षि दयानन्द जी को अपनी मातृभूमि से अत्यन्त प्रेम था, उन्हीं के शब्द हैं, ''यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मत वालों के साथ भी वर्तता हूँ। जैसा देश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते-करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसा मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर है, क्योंकि जैसे पशु बलवान होकर निर्बलों को दुःख देते और मार भी डालते हैं, जब मनुष्य शरीर पाकर वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किन्तु पशुवत् हैं और जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और वह स्वार्थवश होकर पर हानि मात्र करता रहता है, वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।''

जब महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश को लिखना आरम्भ किया यह बात उन्होंने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखी, क्योंकि उस समय देश में मत-मतान्तर फैले हुए थे और मत-मतान्तरों के नाम पर अपनी रोटी-रोजी का व्यवसाय चल रहा था और वह अब महर्षि दयानन्द के समय से ज्यादा चल रहा है। पहले प्रचार के लिये गांव-गांव, शहर-शहर, कस्बा-कस्बा जाना पड़ता था। अब तो टी.वी. चैनलों पर बाबे छाए हुए हैं, टी.वी. चैनलों से जनता को पाखण्ड परोसा जा रहा है और बाबों से टी.वी. चैनलों को भी अच्छी आय हो रही है। इस देश में हर व्यक्ति को सिर्फ पैसा चाहिए, चाहे उसके लिए कुछ भी करना पड़े। अब देखिये! एक शराब का ही छोटा-सा उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ, बाकी को तो छोड़ो। सबको मालूम है कि शराब से धन का नुकसान, शरीर का नुकसान, परिवार में झगड़े, शराब पीकर मारपीट, झगड़ों में मृत्यु तक हो जाती है, शराब पीकर गाड़ी चलाना और कितनों को मौत के घाट उतार देना, शराब पीकर दूसरे की इज्जत को लूट लेना आदि-आदि घटनायें रोज घट रही हैं। यह जनता भी देख रही है और सरकार भी, परन्तु इसको न तो पीने वाले छोड़ना चाहते हैं और न ही सरकार बन्द करना चाहती है, क्योंकि सरकार को इससे टैक्स मिलता है, टैक्स में वृद्धि के लिए सरकार गली-गली में शराब के ठेके खोलने को तैयार है और ऐसा ही हो रहा है। आज से 60 वर्ष पूर्व की मैं बात कहता हूँ। शराब के कहीं-कहीं शहरों में ठेके होते थे, गाँवों में कोई ठेका नहीं होता था। अगर कोई गाँव का आदमी शराब चोरी छिपे भी पी लेता था तो पूरे गांव में उसकी चर्चा होती थी और लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे, उस समय तक लोकलाज थी, परन्तु अब तो न लोकलाज रही और न ही राज का कोई भय। सरकार तो यह चाहती है कि जो नहीं पीते वे क्यों नहीं पी रहे और कई माँ-बाप को मैंने छोटी आयु में बच्चों को दूध के स्थान पर शराब पिलाते देखा है।

महर्षि दयानन्द क्या चाहते थे कि मनुष्य की उन्नति हो, जिन बुराइयों में वह संलप्त है, उनको छोड़े। सारे जीवन उन्होंने लोगों को पाखण्ड, अन्ध-विश्वास, मूर्तिपूजा, तन्त्र-मन्त्र, ताबीज, गोली-गण्डा, असत्य बोलना, स्त्रियों का अपमान करना, वृद्धों का अनादर करना आदि बुराइयों को त्यागने का प्रचार किया और उनकी बातों को सुनने के लिये हजारों की संख्या में लोग आते थे और बहुत से लोगों पर उनके सत्य प्रचार का असर पड़ा और उनका कायाकल्प हो गया। महर्षि दयानन्द ने सत्य के प्रचार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की और आर्यसमाज को नियमबद्ध करने के लिए दस नियम बनाये और इन दस नियमों में सारा विधि-विधान समायोजित कर दिया। मैं तो यह कहा करता हूँ कि आर्यसमाज के दस नियम चार वेद, छह शास्त्रों का निचोड़ है। इन दस नियमों में से यदि कोई सच्चाई, ईमानदारी से एक नियम का भी पालन कर ले तो अन्य नियमों का पालन तो स्वतः ही हो जाएगा, कोई करके तो देखे।

महर्षि को क्यों कहना पड़ा कि आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार करना चाहिये, क्योंकि अपने आचरणों को सुधारे वगैर मनुष्य न अपना भला कर सकता है, न अपने परिवार का, न ही समाज का और न ही देश का भला कर सकता है। शुद्ध आचरण से ही मनुष्य के कार्य शुद्ध होते हैं। **न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते**— अर्थात् ज्ञान के वगैर कुछ भी पवित्र नहीं हैं। महर्षि ने आर्यसमाज के दस नियमों में मनुष्य की पवित्रता का ही ज्ञान दिया है। महर्षि दयानन्द ने वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने का नियम बनाया, क्यों बनाया क्योंकि सारी सत्य विद्या वेदों में हैं, इसलिये विद्या के बिना मनुष्य पशु समान है। **नास्ति विद्यासमं चक्षुः** संसार में विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है। आर्यसमाज को महर्षि दयानन्द ने विश्व की उन्नति के लिए वेदविद्या रूपी नेत्र दिया।

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

महाघोटाला

❑ इन्द्रजितदेव, चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर मो० : 09466123677

गंगा नदी जहाँ से आरम्भ होती है, वहाँ शुद्ध रूप में है। वह स्थान गंगोत्री है। लोगकहते हैं कि छोटा-सा स्थान है जिसे छलांग लगाकर पार किया जा सकता है। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ती है, वह फैलती व गहरी होती है, क्योंकि कई ग्रामों, कई नालों व कई नदियों का जल इसमें आकर मिल जाता है। हरिद्वार तक पहुँचकर यह विशाल रूप धारण कर लेती है। इसके आगे कई नगरों, ग्रामों व कस्बों का प्रदूषित जल समाहित होता है। इन सबके जल में मल-मूत्र, पशुओं का गोबर, कारखानों का कचरा मृतकों की अस्थियाँ, पशु-पक्षियों का मांस तथा न जाने और क्या-क्या अशुद्ध व प्रदूषित वस्तुएँ आ मिलती हैं। इलाहाबाद में गंगा में यमुना भी आ मिलती है तथा उसका भी यही विवरण है। दोनों का मिलन महाप्रदूषण व महाविनाश का संगम है। बंगाल के हुगली नगर तक पहुंचकर तो इसका स्वरूप अति प्रदूषित, अग्राह्य तथा उपेक्षणीय हो जाता है। परन्तु वहाँ का हिन्दू वहाँ की गंगा में डुबकी लगाकर, **'जय गंगा मैया की'** का नारा लगाकर स्वयं को धन्य मान लेता है। यह उसकी विवशता है।

जल की गंगा की तरह वैदिक धर्म व वैदिक मान्यताओं का भी यही इतिहास है। इनका आरम्भ एक अरब छियानवे करोड़, आठ लाख, त्रेपन हजार व एक सौ चौदह वर्ष पूर्व हुआ था। तब इनका इनका आधार चार वेदों के 20379 मंत्र ही थे। कालान्तर में अनेक ग्रन्थ, अनेक घटनाएं, अनेक श्लोक, अनेक दोहे, अनेक ग्रन्थ व पद लिखे गए व मूल ईश्वरीय विश्वासों, मान्यताओं व सिद्धान्तों में मिलते गए। आज हम इतिहास की हुगली के किनारे पर खड़े हैं जहाँ यह निर्णय करना कठिन हो गया है कि शुद्ध वैदिक मान्यताएँ कौन-सी हैं व अशुद्ध मान्यताएँ कौन-सी हैं। जल की गंगा को शुद्ध करने की मांग उठ रही है व अरबों रुपए का व्यय हो भी चुका है परन्तु अभी तक एक प्रतिशत भी यह शुद्ध नहीं हुई। परिणामत: शुद्ध जल की इच्छुक प्रजा अशुद्ध जल से निर्वाह कर लेने को विवश है।

ज्ञान-गंगा में मिलावट के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने **'उपदेश मञ्जरी'** के अष्टम प्रवचन में मनुस्मृति में प्रक्षेप को इन शब्दों में स्वीकार किया है—''जैसे ग्वाले लोग दूध में पानी डालते हैं, उस दूध को बढ़ाते हैं और मोल लेने वालों को फँसाते हैं, उसी प्रकार मानव धर्म-शास्त्र की अवस्था हुई है। उसमें बहुत-से दुष्ट क्षेपक श्लोक हैं। वे वस्तुत: भगवान् मनु के नहीं हैं। यदि कोई कहे कि यह कैसे? प्रमाण यह है कि इन भूलों को मनुस्मृति की पद्धति से मिलाकर देखने से वे श्लोक अयुक्त दीखते हैं। मनु सदृश श्रेष्ठ पुरुष के ग्रन्थ में अपने स्वार्थ साधन के लिए चाहे जैसे वचनों का डालना बिल्कुल नीचता दिखाना है।''

1932 ईस्वी में जापान व चीन के मध्य हुए युद्ध में चीन की दीवार तोड़ी गई थी तो उसमें से एक पेटी मिली थी जिसमें चीनी भाषा में लिखी कई पाण्डुलिपियां मिली थीं जो आज भी ब्रिटिश म्युजियम में रखी हैं। उनमें एक पाण्डुलिपि में यह लिखा है कि भारत में 'मानव धर्मशास्त्र' (=मनुस्मृति) 12 सहस्र वर्षपुराना ग्रन्थहै, उसके 2685 श्लोक हैं। मनुस्मृति के समीक्षक श्री डॉ० सुरेन्द्र कुमार (गुड़गांव) के अन्वेषण के अनुसार इनमें से केवल 1214 श्लोक ही मनु जी के हैं, जबकि शेष 1471 श्लोक मनु के पश्चात् के कई रचनाकारों ने विभिन्न अवसरों पर मिलाए हैं। इसका एक प्रमाण यह है कि मनुस्मृति में पर्दाप्रथा का वर्णन है परन्तु जब यह लिखी गई थी, तब वैदिक समाज व वैदिक मान्यताओं का साम्राज्य था। तब पर्दाप्रथा का प्रचलन न था। सीता, सावित्री, पार्वती, द्रौपदी व शकुन्तला इसके प्रमाण हैं। मनु महाराज को वर्तमान जन्मना वर्ण-व्यवस्था का अपराधी मानकर स्वार्थी नेता उनकी निन्दा करते हैं व मनुस्मृति को सार्वजनिक रूप में फाड़ने अथवा जलाने का उपक्रम भी करते रहे हैं। इस ग्रन्थ में वर्ण-व्यवस्था का प्रतिपादन कर्मों के आधार पर उपलब्ध है। यही प्रतिपादन मूलग्रंथ का अंश है जबकि स्वार्थी व अज्ञानी लोग इसके प्रक्षिप्त अंशों के आधार पर मनु-विरोधी बने बैठे हैं। परिणाम समाज में द्वेष व दूरियाँ व्याप्त हैं। समरसता का अभाव है। **''मनु का विरोध क्यों?''** शीर्षक से आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित व डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी द्वारा लिखित लघु पुस्तक ऐसे तथा कुछ अन्य प्रक्षिप्त अंशों का परिचय कराती है।

सुकवि कालिदास के साहित्य में भी प्रक्षेप हुआ है। उनका एक ग्रन्थ है—'कुमार-सम्भव' जिसका अर्थ है कुमार का जन्म। इसमें 17 सर्ग उपलब्ध हैं, परन्तु इनमें कालिदास विरचित सर्ग आरम्भिक केवल 8 ही माने जाते हैं। मल्लिनाथ की टीका इन 8 सर्गों तक ही है। **'विवरण'** टीका के प्रणेता नारायण पाण्डेय के अनुसार कालिदास का लक्ष्य इस महाकाव्य द्वारा पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण प्रकट करना था जो कुमार कार्तिकेय के जन्म का कारण बना। अत: अष्टम सर्ग में समागम के वर्णन के साथ ही महाकाव्य की समाप्ति मान लेना उचित है। अवशिष्ट 9 सर्ग क्रिसी परवर्ती कवि ने जोड़े हैं। इन सर्गों में कालिदास की लेखनी का वैशिष्ट्य नहीं मिलता। इनकी भाषा-शैली प्रथम 8 सर्गों की तुलना में ही हैं। वस्तु-निरूपण कालिदास जैसे महाकवि की विशेषता के अनुरूप नहीं तथा पुनरुक्तियां व अश्लीलता भी इनमें मिलती है। यह तथ्य प्रो० माधव बल्लभ त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक **'संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास'** के पृष्ठ 95, प्रथम संस्करण, 2005 में स्वीकार किया है। इससे सिद्ध है कि केवल धार्मिक व ऐतिहासिक ग्रन्थों से ही नहीं, अपितु साहित्यिक ग्रंथों में भी मिलावट हुई है।

पं० श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सन् 1879 ईस्वी में एक आरती लिखी जो आज लगभग समूचे भारत में प्रचलित हो गई है। उसकी अन्तिम पंक्ति इस प्रकार से है—**'श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा'**। आप उदयपुर के दुर्ग के बाहर स्थित जय जगदीश हरे मन्दिर में पत्थरों पर अंकित इसी रूप में पढ़ सकते हैं, परन्तु आज इस आरती की दो पंक्तियाँ अधिक मिलती हैं। आज कहीं अन्तिम पंक्ति इस प्रकार मिलती है—**'कहत हरिहर स्वामी सब कुछ है तेरा'** तो कहीं यह दूसरी प्रकार से गाई जाती है—**'कहत शिवानन्द स्वामी सब कुछ है तेरा'**। श्रद्धाराम फिल्लौरी की रचना में हरिहर स्वामी के शिष्यों ने अपने गुरु का नाम घुसेड़कर तथ्य के साथ खिलवाड़ किया तो शिवानन्द स्वामी अथवा उनके शिष्यों ने तथ्य को बदलने का दुस्साहस किया। लोकैषणा के कारण 2 व्यक्तियों द्वारा मूल आरती में मिलावट करने का यह ज्वलन्त उदाहरण है।

किसी आर्यसमाजी सुकवि ने एक सुन्दर गीत लिखा था—

देखा न कोई देवता प्यारे ऋषि की शान का, सिर पर सही मुसीबतें, सोचा भला जहान का।

विस्तार भय से इसे पूरा न उद्धृत करके इसकी अन्तिम पंक्तियां हम उद्धृत करते हैं, जो इस प्रकार है—

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक करते रहे जिस काम को,
शैदा बनाया देश की वेदों के उस फ़रमान को।

मेरे नगर के एक आर्य ने दान देकर सन्ध्या व हवन के मन्त्रों तथा कुछ भजनों की एक पुस्तक की रूप में प्रकाशित व वितरित किया तो मेरा ध्यान पुस्तक के उस पृष्ठ पर अटक गया जिस पर उपरोक्त गीत पूरा छपा था। इस गीत के उपरोक्त **'ब्रह्मा से जैमिनि तक....'** शब्दों के स्थान पर मुझे **'बर्मा से जर्मनी तक करते रहे जिस काम को'** शब्द पढ़ने को मिले। जिस किसी ने इस पुस्तक के प्रूफ देखे व पढ़े होंगे, उसे वैदिक इतिहास व वैदिक मान्यताओं का तनिक भी ज्ञान न रहा होगा तथा उसने वर्तमान सृष्टि के प्रथम पूर्ण ऋषि ब्रह्मा जी तथा म०द० से पूर्व में अन्तिम हुए ऋषि जैमिनि के विषय में कुछ भी सुना पढ़ा व जाना न होगा परन्तु फिर भी उसे प्रूफ़ रीडिंग का कार्य दिया। यदि अज्ञान सेकिए इस बौद्धिक प्रदूषण को न रोका गया तो इसका भयंकर परिणाम यह निकलेगा कि ऋषि ब्रह्मा व ऋषि जैमिनि के नाम गुम हो जायेंगे व महर्षि दयानन्द को बर्मा व जर्मनी का अनुयायी धीरे-धीरे कुछ लोग मानने लगेंगे।

शुद्ध वेदवाणी की सुरक्षा हेतु प्राचीन ऋषियों ने एक दुर्ग का निर्माण किया था जिसका नाम रखा था—वेद चर्चन दुर्ग। इस विधि में वेदमन्त्रों के विकृत पाठ का आठ-पंक्तियों की नियुक्ति की गई। इन्हीं पाठों ने वेदमन्त्रों में प्रक्षिप्त अंशों की मिलावट करने वालों से वेदमार्गों की विचित्रता को सुरक्षित रखा है। इस पर भी स्वार्थी व अज्ञानी पौराणिकों ने यजुर्वेद के (32/3) मन्त्र को विकृत करने का प्रयत्न किया। उन्होंने **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** को **'नतस्य प्रतिमा अस्ति'** कर दिया जिसका अर्थ यह किया—''नम्र रूप धारण करने वाले, उस ईश्वर की प्रतिमा है।''

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

प्रभु से मिलकर

मा न इन्द्राभ्याऽऽ३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत्।
त्वा युजा वनेम तत्॥ 4॥

हे इन्द्र=परमैश्वर्यशाली प्रभो! **नः**=हमें **अक्तुषु**=रात्रि के समान अज्ञानान्धकारों में यह वासना **मा**=मत **आयमत्**=काबू कर ले। मनुष्य का जीवन प्रायः अन्धकार में चलता है। कभी-कभी उसके जीवन में प्रकाश की किरण (flash of light) चमक उठती है, परन्तु सामान्यतः अन्धकार ही रहता है। उसे अपने जीवन के उद्देश्य का ध्यान ही नहीं होता। 'क्या करने आया था और क्या करने में वह लगा हुआ है?' धन-सम्पत्ति के जोड़ने में और भोगों के भोगने में वह अहर्निश लिप्त रहता है। यही उसका रात्रि के समान अन्धकारमय जीवन है और इन रात्रियों में कामादि वासनाएं उसे और अधिक काबू किये चली जाती हैं। वासनाओं से अभिभूत यह व्यक्ति अपनी दुर्गति का आभास होने पर प्रभु से इस रूप में प्रार्थना करता है कि ये व्यसन हमें दबा न लें। ये वासनाएं कैसी हैं?

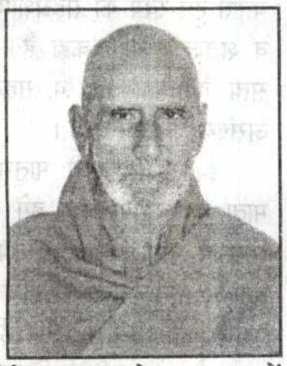

1. अभि आ दिशः='यह कमा लिया है', अब यह कमाओ, उस शत्रु को मार लिया है, अब इसे मारो; यह कर लिया है, अब वह करो; इतना जुटा लिया है, अब इतना जुटाने की व्यवस्था करो; इस प्रकार ये वासनायें हमें चारों ओर अपने आदेशों से दौड़ लगवा रही हैं। इस व्यक्ति को शान्ति नहीं, घर में रहने का सुख नहीं।

2. सूरः=(सु अतिशयितम् उरो यस्य) यह वासना बड़ी बलवान् है। न चाहते हुए भी हम उससे धकेले जा रहे हैं। चाहते हुए भी इसे हम काबू में नहीं कर पाते। काबू किये बिना कल्याण नहीं, परन्तु काबू करना भी कठिन है। हाँ, **त्वा युजा वनेम तत्**=हे प्रभो! तेरे साथ युक्त होकर हम इसे समाप्त कर डालें। आपके सहायक होने पर इस वासना ने हमारा क्या बिगाड़ना? आपकी तो दृष्टि से ही यह भस्म हो जाती है। मुझे आपका ज्ञान हुआ, आपका मेरे हृदय में वास हुआ और यह वासना नष्ट हुई एवं आपका ज्ञान ही मेरी शरण है।

हे प्रभो! कृपा करो। आपकी कृपा ही मुझे वासना पर विजयी बनाएगी। श्रुत-विज्ञान ही मेरा कक्ष है, सुरक्षा स्थान है और आपको मित्रता ही मुझे शक्तिशाली 'आङ्गिरस' बनाने वाली है।

भावार्थ—प्रभु के ज्ञान द्वारा मैं प्रभु को अपना मित्र बनाऊँ और इस मित्रता द्वारा वासना का विनाश करने में समर्थ बनूँ।

(साभार-सामवेदभाष्यम्) —आचार्य बलदेव

नवान्न यज्ञ व वेदोपदेश सम्पन्न

दिनांक 20 अप्रैल 2014 को मदीना में बृहद् यज्ञ का कार्यक्रम श्रद्धा से सम्पन्न हुआ। आर्यजगत् के विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी ने संस्कार को सम्पन्न कराया। हरयाणा की संस्कृति में वैदिक मान्यताएं आज भी सार्थक रूप से समाहित हैं। अनेक आर्य परिवार घर आये नवान्न को यज्ञ-दान के बाद प्रयोग करने की वैदिक परम्परा है। गोशालाओं, आश्रमों में अन्न-दान की परिपाटी है। अवैदिक अन्य राज्यों में पशु-बलि का चाण्डाल रूप है यहाँ ऐसा नहीं है। कार्यक्रम में स्त्री-पुरुषों के अतिरिक्त युवा भी सम्मिलित हुए।

इसी प्रकार 27 अप्रैल 14 को जसराणा में आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ व वेदोपदेश हुआ। कार्यक्रम में सैकड़ों स्त्री-पुरुषों ने श्रद्धा से यज्ञ में आहुति प्रदान की। आचार्य जी ने भारत के सामाजिक व आध्यात्मिक सौहार्द के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए **'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'** के वेदमन्त्र की सुन्दर व्याख्या की। श्री ओमप्रकाश जी आर्य के परिवार द्वारा यज्ञ-श्रद्धा देखते ही बनती थी। दिनांक 28 अप्रैल को भी सैक्टर-1, रोहतक में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञप्रेमी श्री ओमप्रकाश जी एसडीओ के घर अनेक स्त्री-पुरुष व युवाओं ने यज्ञ में आहुति प्रदान की। आचार्य जी ने प्रभुभक्त को प्रभु की असीम शक्ति की अनुकम्पा का वर्णन किया। **'अभिक्षरन्ति सोम धारय'** हृदय और मस्तिष्क में प्रभु आनन्द की धारा बहा देते हैं, जो बिना यज्ञ-भावना के पैदा नहीं होती।

आर्य विचारधारा : नई पीढ़ी को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम-महाशय धर्मपाल

कोटा, 28 अप्रैल। समाज को एक सूत्र में बांधकर साथ चलने से निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। मन मे समाज के प्रति सेवा करने की लगन व इच्छा शक्ति हो तो हम जरूरतमंदों की सेवा करके उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं। उक्त विचार एम.डी.एच. के चेयरमेन महाशय धर्मपाल ने दिल्ली में आयोजित एक क्रार्यक्रम में आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन की मीडिया एलबम का विमोचन करते हुये व्यक्त किए।

महाशय धर्मपाल ने कहा कि आर्य विचारों की नई पीढ़ी को जोड़ने का कार्यक्रम किया जा रहा है। दिनांक 27 अप्रैल को आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा द्वारा तैयार की गई मीडिया एलबम के बारे में महाशय जी को श्री चड्ढा द्वारा जानकारी दी गई।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रकाश आर्य ने कहा कि आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन जाति बंधनों से उपर उठकर किए जा रहे हैं जिसके अच्छे परिणाम आ रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान सुरेश चंद्र अग्रवाल ने कहा कि निश्चय ही आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन नई पीढ़ी को जोड़ने के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह व महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि सम्मेलनों के माध्यम से समान गुण, कर्म, स्वभाव के युवक-युवतियों को जीवन साथी चुनने का सुअवसर प्राप्त होता है।

आर्य परिवार वैवाहिक सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में व दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा केतत्वावधान में अब तक सात सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। शीघ्र ही आठवां सम्मेलन इंदौर में व नवां सम्मेलन दिल्ली में आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर आर्य साध्वी उत्तमायति, धर्मपाल आर्य, अरूण वर्मा, आचार्य अंशुल देव, राजीव आर्य, रामप्रसाद याज्ञिक (कोटा), जितेन्द्र भाटिया, जोगेन्द्र खट्टर, शिव प्रसाद मदान तथा सोमदत्त महाजन आदि उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सदस्यों से निवेदन

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 150/- रुपये **आर्य प्रतिनधि सभा हरयाणा** के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। **'आर्य प्रतिनिधि' पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 1500/- रुपये है।** जो महानुभाव इस पत्रिका को मँगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा'** के नाम से सभा कार्यालय **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक'** के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले आर्य प्रतिनिधि को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

व्यवस्थापक : 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक दयानन्दमठ, रोहतक

thearyasamaj.org

वेद और सत्यार्थप्रकाश

गतांक से आगे....

चार वेदमन्त्र संहितायें ईश्वरीय ज्ञान हैं जो आदि सृष्टि में मनुष्यों को ईश्वर से प्राप्त हुआ। इन्हें नित्य कहा जाता हैं। नित्य वह ज्ञान होता है जो सदा-सर्वदा एक समान रहता है। ऐसा ज्ञान समय के साथ घटना व बढ़ता नहीं है। ईश्वर में यह ज्ञान अनादि काल से है और अनन्त काल अर्थात् भविष्य मे भी इसी प्रकार से इतना ही, न कम न अधिक, बना रहेगा। यह ज्ञान क्योंकि कभी उत्पन्न ही नहीं हुआ अर्थात् यह ईश्वर में हमेशा से है, इस कारण यह भविष्य में भी इसी प्रकार से पूर्ववत्, वर्तमानवत् सुरक्षित रहेगा। प्रत्येक युग व कल्प में इसका अस्तित्व होगा व यह ऐसे का ऐसा ही परिवर्तन बिना बना रहेगा। यह ज्ञान मनुष्यों को किस प्रकार से मिला, इसका संक्षिप्त उत्तर है कि ईश्वर ने सृष्टि व मनुष्येतर प्राणियों की रचना करने के बाद युवा मनुष्यों को बनाया। इन स्त्री व पुरुषों में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा व ब्रह्मा नाम के चार ऋषि भी उत्पन्न हुए। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तरयामी होने से मनुष्यों की जीवात्मा के भीतर भी विद्यमान है। उसने इन प्रथम चार ऋषियों की आत्मा में प्रेरणा करके वैदिक भाषा व ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान स्थापित कर दिया। आज कम्प्यूटरों में भी पेनड्राइव, फलोपी या सीडी व ऐसे अन्य साधन बन गये हैं कि इन्हें कम्प्यूटर में लगाकर इन्सटाल की कमाण्ड या आदेश देते हैं और इनमें जो ज्ञान, भाषा, डेटा, आडियों व वीडियोज् आदि होते हैं वह सब कम्प्यूटर में अपलोड हो जाते हैं और कम्प्यूटर यथोचित् प्रकार से काम करने के योग्य हो जाता है। कम्प्यूटर नेटवर्किंग से एक कम्प्यूटर के डेटा, आडियों, वीडियों, शाब्दिक ज्ञान आदि को वेबसाइट, इमेल व लिंक आदि के द्वारा आदान-प्रदान किया जाता है। ईश्वर के ज्ञान देने के बाद उन चारों ऋषियों को ईश्वर की प्रेरणा हुई कि वह उन्हें दिया गया वेदों का ज्ञान एक-एक कर ब्रह्मा जी को प्रदान करें। ब्रह्माजी को भी ऐसी ही प्रेरणा हुई थी। इस प्रकार से प्रथम चार ऋषियों ने उच्चारण व श्रवण के द्वारा ब्रह्माजी को चार वेदों का ज्ञान दिया। चिन्तन करने पर हमें लगता है कि जब अग्नि ऋषि ब्रह्माजी को ऋग्वेद का ज्ञान दे रहे थे तो वहां उपस्थित वायु, आदित्य व अंगिरा भी ऋग्वेद के मन्त्रों व उनके अर्थों आदि को अवश्य ही सुन रहे होंगे। उन सब पांच ऋषियों को इस प्रकार से ऋग्वेद का ज्ञान एक समय में हो गया। इसके बाद वायु ने यजुर्वेद का ज्ञान ब्रह्माजी को दिया और इसके सम्पन्न होने पर पांचों ऋषियों को यजुर्वेद का ज्ञान भी हो गया। इसी प्रकार से सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान भी सभी पांचों ऋषियों को उत्तर काल में हुआ। यह कार्य समाप्त होने पर शेष मनुष्यों, स्त्री व पुरुषों को ज्ञान कराने का अवसर आया। इन पांच ऋषियों ने समूह में उन सबकों चारों वेदों का ज्ञान कराने का प्रयत्न किया। हमारा निजी अनुमान है कि अनेक मनुष्य अर्थात् स्त्री व पुरुष चारों वेदों के जानकार हो गये। कुछ अधिक प्रवीण व योग्य बने व कुछ कम। इस प्रकार से सृष्टि के आरम्भ में वेदों के द्वारा ज्ञान के प्रचार व अध्ययन-अध्यापन की परम्परा आरम्भ हुई।

ईश्वर ने अपने नित्य ज्ञान व सामर्थ्य से ब्रह्माण्ड की रचना की। यह ब्रह्माण्ड कैसा है कि जिसका आज के वैज्ञानिक भी इसे पूरा जान नहीं पाये। इतनी चर्चा हम अवश्य कर लें कि रात्रि में जो तारे दिखाई देते हैं, यह सब हमारे सूर्य की ही तरह के सूर्य हैं। हो सकता है कि कुछ सूर्य हमारे इस सूर्य से भी कहीं अधिक बड़े हों। वैज्ञानिक मानते हैं कि सृष्टि में कई बड़े-बड़े सूर्य इतनी अधिक दूरी पर हैं जिनका प्रकाश इस पृथिवी पर लाखों वर्ष की यात्रा करके पहुंचता है। ऐसे भी तारों के होने की सम्भावना है, कि सृष्टि को बने 1,96,08,53,115 वर्ष पूर्ण होने पर भी, उनका प्रकाश अभी तक दूरी के कारण पृथिवी पर पहुंच नहीं सका है, आने वाले समय में वह पहुंचेगा। इससे हमारी पृथिवी व अनेक सूर्य लोकों की परस्पर दूरी का पता चलता है। इस व ऐसे कारणों से वेदों ने व हमारे प्राचीन ऋषियों ने ईश्वर को सर्वव्यापक, ब्रह्म, सृष्टिकर्ता आदि कहा है। वह सर्वव्यापक ईश्वर कैसा है? विचार करने पर पता चलता है कि उसका न कोई ओर है और न कोई छोर अर्थात् वह आदि व अन्त से रहित है। इस बात को समझना जरा कठिन है। निरन्तर स्वाध्याय करते रहने व चिन्तन-मनन एवं विचार करते रहने से यह बात स्वतः बुद्धि में बैठ जाती है। इसके साथ वह ईश्वर सर्वज्ञ व सर्व-शक्तिमान भी है। सर्वज्ञ का अर्थ है ज्ञान की पराकाष्ठा। ज्ञान की पराकाष्ठा कभी भी एकदेशी सत्ता में नहीं हो सकती, वह केवल सर्वव्यापक सत्ता में ही होती है। सर्वव्यापक सत्ता का मूर्तिमान होना असम्भव है, वह केवल निराकार ही हो सकती है। इसके साथ जिस सत्ता में इतने गुण हों, वह अत्यन्त सूक्ष्म ही हो सकती है और वस्तुतः है भी। ज्ञान केवल चेतन सत्ता को ही होता है अर्थात् उसमें विहित व निहित होता है। चेतन सत्ता का एक गुण उसका ज्ञाननिहित व ज्ञान प्राप्ति में समर्थ होना है तो उसका दूसरा स्वभाविक गुण क्रिया या कर्म से युक्त होना है। ईश्वर में ज्ञान है तो कर्म भी है और कर्म के होने से वह खाली, आलसी, निकम्मा या पुरुषार्थहीन कभी नहीं होता। इसी कारण वह सृष्टि को बनाता है, चलाता है, पुरानी व बेकार होने पर उसकी प्रलय करता है। फिर पुनः उस प्रलय की हुई सृष्टि से नई सृष्टि बनाता है। इस प्रकार से वह सतत् कर्मो को करते हुए व्यस्त रहता है। वेदों में उसने स्वयं के बारे में बताते हुए स्वयं को सहस्रशीर्षा, सहस्रबाहु व शतक्रतो आदि कहा है। यह वस्तुतः सत्य है। यहां शत व सहस्र का अर्थ असंख्य या अनन्त है।

ईश्वर ने हमारी मातृभूमि व भूमि माता को बनाया तथा हमें जन्म दिया। भूमि में नाना प्रकार के उपयोगी पदार्थ बनाकर सारी दुनिया के मानवों को निःशुल्क प्रदान किये। हमारा शरीर ईश्वर की ही रचना है। यह उसी का चिन्तन है कि हमें उसने देखने, सुनने, बोलने, छूने व सूंघने के लिए इन्द्रियां प्रदान की व भोजन के लिए तरह-तरह के अत्यन्त स्वादिष्ट एवं पौष्टिक पदार्थ बनाकर दिये हैं। जिस ईश्वर ने इतना कुछ दिया है, क्या उसने सृष्टि के आरम्भ में हमें भाषा व ज्ञान नहीं दिया था? हमारा चिन्तन कहता है कि जिस ईश्वर ने हमारा सिर, आंखें, नाक, कान, गला, मुंह व त्वचा को बनाया है उसको यह ज्ञान भी था कि मनुष्य को इन वस्तुओं की परम आवश्यकता होगी। बिना इसके उसका काम नहीं चलेगा। उसने शरीर के अन्दर हमारे लिए मन व बुद्धि भी बनाई है। यदि ईश्वर को बुद्धि बनाने का ज्ञान था तो उसे यह ज्ञान तो अवश्य ही था कि मनुष्य मुंह से बोलेगा, कान से सुनेगा तो उसे भाषा की आवश्यकता भी होगी। भाषा के साथ-साथ उसे ज्ञान की भी आवश्यकता है जिससे वह सत्य व असत्य का निर्धारण कर सत्य को ग्रहण व असत्य को त्याग कर सके। अतः ईश्वर ने ही सृष्टि के आरम्भ में भाषा के साथ ज्ञान भी मनुष्यों को प्रदान किया था। इस ज्ञान को देने की ईश्वर की प्रणाली वही है जिसका प्रकाश महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में किया है तथा इस लेख के पूर्व भाग में किया गया है। यदि ईश्वर भाषा व वेदों का ज्ञान नहीं देता तो उसका सृष्टि व प्राणिमात्र की रचना करना व्यर्थ हो जाता। जो लोग कहते हैं कि ईश्वर ने भाषा व वेदों का ज्ञान नहीं दिया, हमें लगता है कि वह लोग स्वयं को विज्ञ व ईश्वर को मूर्ख समझते हैं। आत्मा नित्य व अनादि है। हमारे अनन्त व असंख्य जन्म व्यतीत हो चुके हैं। हम प्रायः सभी जीव-योनियों में अनेकों-अनेक बार रहे हैं। अनेक बार हमारा मोक्ष भी हुआ है। यह वेद भी, हम जब-जब मनुष्य बने, उनमें से अधिकांश योनियों में हमने सुनें, देखें, व पढ़ें हैं। आज फिर इन्हें देखने का सुअवसर परमात्मा व महर्षि दयानन्द की कृपा से प्राप्त हुआ है। हमें पूरी तन्मयता से वेदों का अध्ययन कर तथा मन्त्रार्थों में निहित रहस्यों को जानकर उनके अनुरूप अपना आचरण बनाकर व इसके साथ-साथ ध्यान-चिन्तन व ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर, इस जीवन को सार्थक बनाना चाहिये। अन्य प्रकार से जीवन जीनें में ऐन्द्रिक, भौतिक व विषय सुख तो मिलेगा, परन्तु उससे आत्मा सुखी कदापि नहीं होगा। आत्मा की अवहेलना आगे चलकर महंगी पड़ेगी। इसका कारण यह है कि प्रत्येक सुख में कई दुःख जुड़े रहते हैं। सुखों की प्राप्ति में पुरुषार्थ कर धन व साधन प्राप्त करने में दुःख, सुखों के भोगने के बाद फिर पूर्व की स्थिति आने पर दुःख तथा सुख का परिणाम दुःख होता ही है। अधिक सुख भोगने से इन्द्रियों व शरीर के शिथिल पड़ने व रोग आदि के होने से भी दुःख होता है जिसे परिणाम दुःख कहते हैं। अतः मित्रों, सावधान, आत्मा को जानों, पहचानों, ईश्वर की भक्ति, उपासना को अपना कर आत्मा को संतृप्त व सन्तुष्ट कर जीवन को सफल करो।

सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित एक आर्ष ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का पहला संस्करण सन् 1875 में प्रकाशित हुआ था। इसमें मुद्रण आदि की कुछ त्रुटियों और अन्त के दो समुल्लास न छपने के कारण महर्षि दयानन्द ने इसका संशोधित संस्करण तैयार किया जो उनकी 30 अक्तूबर, सन् 1883 को मृत्यु के पश्चात सन् 1884 में प्रकाशित हुआ था। इसमें 14 समुल्लास हैं जिनमें ईश्वर के स्वरूप व उसके 100 नामों की व्याख्या से लेकर विवाह, माता-पिता के कर्तव्य, बालकों की शिक्षा, गृहस्थ जीवन के कर्तव्य, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम का स्वरूप व उनसे जुड़े विषय, वेद सम्मत राजधर्म व शासन के संचालन विषयक जानकारी, जीवात्मा, परमात्मा का स्वरूप व विभिन्न विषय, वेद सम्बन्धी विषय, मुक्ति व मोक्ष का सप्रमाण वर्णन, आर्यावर्तीय मत-मतान्तरों का वर्णन व उनका खण्डन-मण्डन व अन्तिम 3 समुल्लासों में नास्तिक चारवाक, बौद्ध व जैन मत समीक्षा और उसे पश्चात ईसाई मत तथा कुरआन की समीक्षा व परीक्षा की गई है।

सत्यार्थ प्रकाश जैसा ग्रन्थ संसार में दूसरा कोई नहीं है। इसका कारण है कि जिसके पास सत्य होता है वहीं सबसे अधिक निर्भीक, साहसी तथा बलवान होता है। जब तक सत्यार्थप्रकाश की रचना व प्रकाशन नहीं हुआ था, सभी मत अपने मत की भ्रान्त व सृष्टिक्रम के विरुद्ध नियमों व सिद्धान्तों का जोर-शोर से प्रचार करते थे। यह इतिहास से सिद्ध तथ्य है कि भारत में सर्वत्र लोगों को प्रलोभन, डर, छद्म रूप से सेवा करके, छल, प्रंपच व तलवार से भोले-भाले लोगों का धर्मान्तरण किया गया है। क्रमशः

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

युगपुरुष स्वामी दयानन्द कौन थे?

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

''मैं सादर प्रणाम करता हूँ? उस महागुरु दयानन्द को, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्मगाथा में सत्य और एकता का बीज देखा। जिसकी प्रतिभा ने भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व विषयक अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता के जागृति लोक में लाना था। उस गुरु को मेरा बारम्बार प्रणाम है।'' ये ज्वलन्त शब्द विश्वकवि रविन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा अभिव्यक्त अपने एक ऋषि कल्प युगपुरुष के प्रति अर्पित नवीन भारत की श्रद्धांजलि के प्रतीक है।

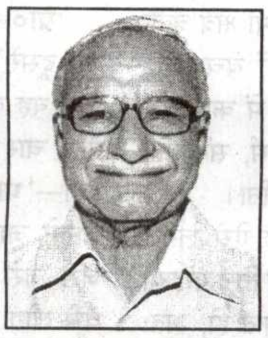

कन्हैयालाल आर्य

वास्तव में महर्षि दयानन्द हमारी आत्मा के बन्धनों को काटने आये थे। महर्षि दयानन्द का हमारे इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है। उन्होंने हिन्दू धर्म को मध्ययुग की धार्मिक कूपमण्डूकता और पुरोहित तन्त्र के चंगुल से छुटकारा दिलाने का सबसे सबल प्रयास किया था। अन्धविश्वास, महन्त, मठाधीश एवं पण्डे-पुजारी के जंजाल में उलझे हुए भारतीय समाज को एक नया प्रकाश देकर, उन्होंने उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का सबल प्रयास किया था।

जैसे चमकने वालों में सूर्य, हाथियों में ऐरावत, भौतिक पदार्थों में रत्न वीरों में जामदग्न्य, आदर्श पुरुषों में राम, नीतिज्ञों में चाणक्य, योगेश्वरों में श्रीकृष्ण तथा शीतल तत्त्वों में चन्द्रमा को निराला माना जाता है। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द भी एक निराला व्यक्ति है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन काल में सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके तत्कालीन समाज की स्थिति को देखा तो पाया कि लोग बहुदेवतावाद, जड़-पूजा, छुआछूत, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष, जादू-टोना, पशुबलि, मद्य, मांसाहार आदि अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रस्त है। ईश्वर के नाम पर अनेक स्वयंभू ईश्वर बनकर जनता को पतन की ओर ले जा रहे थे। भारतीय समाज की जीवन परम्परा ईश्वरोक्त वैदिक धर्म से लगभग भिन्न हो चुकी है। लोग वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि आर्षग्रन्थों में वर्णित सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, निराकार ईश्वर से भिन्न कपोल कल्पित देवी, देवताओं की पूजा कर रहे हैं। स्त्री जाति पर भारी अत्याचार हो रहे हैं। स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है। नारी ही नरक का द्वार है ऐसी अवैदिक मान्यताओं को समाज में प्रचारित कर समाज को पीड़ित किया हुआ है। बालविवाह, बहुविवाह एवं विधवाओं पर अत्याचारों से समाज में हाहाकार मच रहा था।

ऐसे अन्धकार के समय परमेश्वर की अपार कृपा से युगपुरुष ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने अवैदिक मिथ्या मान्यताओं के प्रचलन से समाज और राष्ट्र में होने वाली अनेक प्रकार की हानियां तथा कुपरिणामों को देखकर समाज में पुनः विशुद्ध वैदिक मान्यताओं की स्थापना करने का मन में दृढ़ संकल्प किया। विश्व को ईश्वर के सत्य स्वरूप का दिग्दर्शन कराया और उद्घोष किया कि एक ईश्वर के पुत्र होने के नाते हम सब भाई हैं। महर्षि का स्वप्न था कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दुःख और अशान्ति से छूटकर सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त करें। मानव को मानव से अलग करने वाली साम्प्रदायिक दीवारों को वे समाप्त करना चाहते थे।

मेरा प्यारा दयानन्द सब बातों में निराला था। गुरु बना, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाजपतराय तथा श्यामकृष्ण वर्मा जैसे अनूठे शिष्य उत्पन्न किये जिन्होंने राष्ट्र और समाज की अनथक सेवा की। शिष्य बने और ऐसे समर्पित कि गुरु को कहना पड़ा— ''दयानन्द! मुझे आपका जीवन चाहिये। राष्ट्र एवं समाजहित में तुम्हारे जीवन की आहुति चाहता हूँ।'' गुरु के इस पवित्र वाक्य को जीवन का आदर्श मानकर आजीवन निभाया। गुरुडम नहीं चलाया। सन्तत्व में, त्याग में, तपस्या में, वैराग्य में, योगियों में, समाज सुधारकों में, वेद भाष्यकारों में, ब्रह्मचारियों में, युग प्रवर्तकाओं में, जीने वालों में, मरने वालों में आपका निरालापन समाज को प्रेरणा देता रहा है।

महर्षि दयानन्द जी के उपकारों को गिना तो नहीं जा सकता। परन्तु उनके मुख्य कार्यों में ईश्वर के सच्चे स्वरूप की स्थापना, यज्ञ प्रणाली को पुनर्स्थापित करना, वेदप्रचार, स्वराज्य के पुनरुद्धारक, गोरक्षक, अछूतों के सच्चे सुधारक, हिन्दी भाषा के सच्चे हितैषी, अनाथों के रक्षक एवं सार्वभौमिक धर्म के प्रचारक के रूप में आपके योगदान को पूरा विश्व जानता है। परन्तु स्त्री जाति के प्रति आपके किए गए उपकारों को भुलाना तो कृतघ्नता होगी। महर्षि के प्रचार कार्य से पूर्व स्त्री जाति को पांव की जूती माना जाता था। यदि वह विधवा हो जाती थी उसे आयुपर्यन्त ठण्डे सांस भर के जीवन व्यतीत करना पड़ता था। **'ढोल, गंवार, शूद्र और नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।'** कहकर नारी को अपमानित किया जाता था। ऋषि दयानन्द जी ने महर्षि मनु के कथनानुसार **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'** जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं कि घोषणा करके नारी जाति पर बड़े उपकार किये। कन्याओं की छोटी आयु में विवाह कर दिये जाते थे। बूढ़ों के साथ विवाह कर उन्हें विधवा बनाकर समाज में अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश किया जाता था। बाल विवाह का विरोध कर युवावस्था में विवाह का प्रचार किया। कन्याओं की शिक्षा पर बल दिया, उन्हें घूंघट एवं पर्दे से बाहर निकाला। आज ईश्वर कृपा से नारियां मजिस्ट्रेट, डाक्टर, वकील, अध्यापिका, प्रशासनिक अधिकारी, मन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति तक बन रही हैं। स्वामी जी के उपकारों को स्त्री जाति कभी भी नहीं भुला सकती।

आज केवल भारत ही नहीं, सारे धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक संसार पर महर्षि दयानन्द का सिक्का है। विभिन्न मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल दिये हैं। धर्मपुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है। दलितोद्धार की प्राण, समाज सुधार की जान, आदर्श सुधारक शिक्षा प्रचारक, वैदिक मान्यताओं का पुनर्स्थापक, स्त्री जाति का सच्चा हितैषी, गोमाता का सच्चा रक्षक, करुणानिधि दयानन्द जी के जीवन से हम प्रेरणा लें।

आओ! हम अपने आपको ऋषि दयानन्द के रंग में रंगें। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो, हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो, तभी हम एक स्वर से पुकार सकेंगे।

पापों और पाखण्डों से,
ऋषिराज छुड़ाया था तूने।
भयभीत निराश्रित जाति को,
निर्भीक बनाया था तूने।
बलिदान तेरा था अद्वितीय,
हो गई दिशायें गुञ्जित थी।
जन-जन को देगा प्रकाश,
वह दीप जलाया था तूने॥

अन्त में यह निवेदन करना चाहता हूँ आर्यो! उठो! जागो! अपने को सम्भालो। अपने स्वरूप को देखो। जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज रूपी पवित्र संगठन को खड़ा किया था, उनकी पूर्ति के लिए व्रती तथा संकल्पी बनो। संसार हमारी ओर देख रहा है। वैचारिक चिन्तन आर्यसमाज की सबसे बड़ी सम्पदा है। हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें ऋषि दयानन्द जैसा पुण्यात्मा प्रभुभक्त, सत्यज्ञान का प्रेरक मार्गदर्शक मिला है।

संपर्क सूत्र—04/45, शिवाजीनगर,
गुड़गांव, मो० 09911197073

विज्ञापन के माध्यम से दी जाने वाली सहयोग राशि

अन्दर के पृष्ठों के विज्ञापन रेट

एक पृष्ठ 5000/-, आधा पृष्ठ 2500/-, चौथाई पृष्ठ 1000/-, 1/8 पृष्ठ 500/- एवं 1/8 पृष्ठ से कम स्थान पर न्यूनतम एक बार का शुल्क 250/- रु०।

नोट—11 माह की सहयोग राशि प्राप्त होने पर धन्यवाद स्वरूप 12 माह के 48 अंकों में विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक प्रत्येक मास की 7,14,21, 28 तारीखों में प्रकाशित किया जाता है।

व्यवस्थापक, **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक,
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द के भव्य भवन की एक योजना

गतांक से आगे....

भारतीयता का मूल आधार कर्मफल व्यवस्था

आज हर व्यक्ति सर्वत्र सफल होना चाहता है। सफल शब्द में फल शब्द जुड़ा हुआ है। कहीं फल तभी आता है और पकता है जहाँ उसका मूल (=जड़) हरा-भरा होता है। तभी तो कहते हैं कि जड़ को सींचने से ही तना, शाखा, पत्ते, फूल-फल आते और हरे-भरे रहते हैं, पत्तों को पानी देने से बात नहीं बनती।

ठीक इसी प्रकार भारतीय संस्कृति, धर्म, परम्परा, सभ्यता तभी सफल हो सकती हैं जब हम उसके मूल आधार को समझें और फिर उसको हर प्रकार से सींचें।

भारतीय शास्त्रों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीयता का मूल आधार-कर्मफल व्यवस्था ही है। भारतीयता के सारे तत्त्व इसी से जुड़े हुए हैं। सभी धर्म और शास्त्र इसको स्वीकार करते हैं।

इस मूल आधाररूपी कर्मफल व्यवस्था को सही रूप में समझने, अपनाने पर ही हमारे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन में सफलता, शुद्धता, सरलता आ सकती है।

आज कर्मफल व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास न होने पर ही सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार, हेराफेरी, बेईमानी, अपवित्रता फैल रही है, जिसके कारण न चाहते हुए भी सभी दुःखी हैं।

अतः जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता और सुख प्राप्त करने के लिए सबसे पहले इस जड़ को पकड़ने, सींचने की जरूरत है।

प्रिय पाठको! भारत, भारतीयता, उसका भाव, उसका मूल, उससे अन्य तत्त्वों का सम्बन्ध और उस पर विश्वास, भाग्य तथा कर्म आदि को पूरी तरह से जानने के लिए जरूरत है कि 'भारतीयता का मूल आधार' आप के हाथ में आए।

ऋतुराज ऋषि दयानन्द

अक्षत! इधर आना, हां, जी।

प्राध्यापक-यहाँ एक हस्तलेख था?

अक्षत-क्या 'ऋतुराज ऋषि दयानन्द' वाला?

प्राध्यापक-हाँ,

अक्षत-मैंने उसको सामान्यतः देखा था, अब वह, रजत के पास है। हाँ, ऋतुराज का क्या अर्थ है?

प्रा०-ऋतुओं का राजा।

रजत-ऋतुओं का राजा तो वसन्त कहलाता है?

प्रा०-यहाँ उसी का ही प्रकरण है।

निष्कर्ष-पर इसको ऋतुओं का राजा क्यों कहते हैं?

प्रा०-सर्दी, गर्मी आदि हर ऋतु का अपना-अपना स्वरूप और प्रभाव है। इन सब का प्राणियों और प्राकृतिक जगत् पर जो प्रभाव है, वह हर तरह से स्पष्ट है। इन सब के प्रभाव से वसन्त का प्रभाव प्रत्येक प्रकार से अनोखा है अर्थात् फूल, फल अन्न, हरे-भरेपन और बसने की दृष्टि से वसन्त की कोई तुलना नहीं। हर भाषा के साहित्य में इसकी चर्चा मिलती है। सभी इसको नवजीवन का संचार करने वाली ऋतु कहते हैं।

शुभम-वसन्त का स्वरूप, परिणाम, प्रभाव पूर्णतः प्रत्यक्ष है। पर इस लेख में वह ऋषि दयानन्द का विशेषण कैसे है?

प्रा०-वसन्त के पूर्व वर्णन में एक वाक्य आया है कि नवजीवन का संचार करने वाली ऋतु। इससे पूर्ववर्ती ऋतु की सर्दी पतझड़ ला देती है। महापुरुष भी वसन्त की तरह अपने अपने क्षेत्र में नवजीवन का संचार कर देते हैं। ऋषि दयानन्द का जीवन और विचारधारा इसके स्पष्ट प्रमाण हैं कि मध्यकालीन परिस्थितियों के कारण सोए हुए भारत को ऋषि ने ऋतुराज बनकर जगा दिया।

वरुण-आर्य बन्धु अपने नगर कीर्तन में प्रायः एक गीत बोलते हैं—

धन्य-धन्य है ऐ ऋषि,
तूने हमें जगा दिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम,
तूने हमें बचा लिया॥

प्रा०-वरुण! तूने मेरे कहने से पहले ही गीत का स्मरण करा दिया। वस्तुतः गीत की इन पंक्तियों के पीछे यही सारी कहानी छुपी हुई है।

धीरज-हां, ऋषि दयानन्द के साथ ऋतुराज शब्द का विशेषण पर्याप्त सार्थक सिद्ध होता है। पुनरपि ऋषि ने किस-किस क्षेत्र में नवजीवन का संचार किया है?

प्रा०-वैसे तो कोई भी क्षेत्र ऋषि के प्रभाव से अछूता नहीं बचा। हाँ, यदि एक छोटे से वाक्य में कहनाहो, तो कह सकते हैं कि धर्म, संस्कृति, वेद का शुद्ध स्वरूप दर्शाना।

अजेय-यह तो कुछ ऐसे लगता है जैसे कि '**जिन खोज्या तिन पाइयां गहरे पानी पैठ**' वाली बात हो, अतः इसके लिए गहरे में पैठना पड़ेगा। हां, कोई सर्व प्रसिद्ध संकेत पहले करें, तो यह बात भी स्पष्ट हो सकती है?

प्रा०-देखो! यह सब स्वीकार करते हैं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने, छुआछूत को दूर करने, स्त्रीशिक्षा का प्रचार आदि क्षेत्रों में ऋषि दयानन्द ने नई दिशा दिखाई है। क्या यह नव-जीवन संचार का स्पष्ट उदाहरण नहीं है, जहाँ-जहाँ ऋषि ने सोतों को जगाया।

वत्सल-आर्य बन्धु एक चौकीदार की कई बार कहानी सुनाते हैं, जो कि अन्तिम शब्दों को स्पष्ट करती है। हां, मैंने तो इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया, उसको आप स्पष्ट कर दें, तो हो सकता है, वह इस अवसर पर स्मरणीय सिद्ध हो?

प्रा०-कहते हैं, एक चौकीदार था, वह दूसरे पहरेदारों की तरह रात को जहां यह कहता कि जागते रहो! वहाँ प्रातः चार बजे से यह कहना शुरू कर देता—'**पांच हजार साल से सोने वालो जागो**' उसके इस वाक्य पर जैसे-जैसे लोगों का ध्यान गया, वैसे-वैसे लोग उससे पूछते, तू प्रातः-प्रातः यह क्यों कहता है? हम कोई पांच हजार साल से सो रहे हैं? तब चौकीदार हर एक को यही उत्तर देता कि भाई मैं अधिक पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। मैंने तो एक सत्संग में सुना था। हाँ, आप ऋषि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश पढ़ें, वहाँ आपको इसका उत्तर मिलेगा।

क्रमशः अगले अंक में....

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. महिला आर्यसमाज बालधनकलां, जिला रेवाड़ी 10-11 मई 2014

—सभामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विद्यालय-विभाग (हरिद्वार) उत्तराखण्ड-249404

प्रवेश-सूचना

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार द्वारा संचालित आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग हरिद्वार (केवल छात्रों के लिए) एवं कन्या गुरुकुल 60, राजपुरा रोड, देहरादून (केवल कन्याओं के लिए) में सत्र 2014-15 हेतु कक्षा 01 से 9 तक एवं कक्षा 11 में प्रवेश प्रारम्भ है।

वैदिक संस्कारों पर आधारित दिनचर्या एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम, छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास करने वाली शिक्षण संस्था।

विज्ञान वर्ग में P.C.M. एवं P.C.B. एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग अध्ययन की सुविधा।

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम

विशेष-हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तीनों भाषायें अनिवार्य हैं एवं उत्तम संस्कारों हेतु धर्मशिक्षा भी अनिवार्य है।

प्रवेश अवधि : 20 अप्रैल 2014 से 20 जुलाई 2014 तक प्रत्येक रविवार को प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा होगी।

बालकों के प्रवेश हेतु
सम्पर्क सूत्र : 9927016872, 9412025930, 9690679382, 9927084378, www.gurukulkangrividyalaya.org

बालिकाओं के प्रवेश हेतु
सम्पर्क सूत्र : 0135-2748334, 9760183502, 9761219696, 9759348510

(डॉ० सविता आनन्द)
प्राचार्या,
कन्या गुरुकुल, 60 राजपुरा रोड,
देहरादून

(जयप्रकाश विद्यालंकार)
सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

आर्यसमाज मण्डौरा (सोनीपत) की स्थापना

ईश्वर की असीम कृपा से दिनांक 20 अप्रैल 2014 रविवार को आर्यसमाज मण्डौरा (सोनीपत) की स्थापना डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार के करकमलों द्वारा स्थापित हुआ इसके मुख्य प्रेरक सुखवीरसिंह दहिया तिलक नगर रोहतक व रामकिशन दहिया मण्डौरा हैं। सुबह 8.30 बजे यज्ञ-सत्संग महेन्द्रसिंह व रणवीर के घर पर डॉ० साहिब के ब्रह्मत्व में हुआ जिसमें सहयोगी रणवीरसिंह मान कमल कालोनी, महावीरसिंह शास्त्री सैक्टर-4 रोहतक तथा हरीओम् शास्त्री मण्डौरा थे।

डॉ० जगदेवसिंह जी ने अपने उद्‌बोधन में यज्ञ की महिमा, आर्यसमाज के मन्तव्य, समाज में सुसंस्कारों की स्थापना तथा धर्म के स्वरूप पर विस्तृत व्याख्यान दिया तथा महावीर शास्त्री ने भी यज्ञ की महिमा पर बोलते हुये राजेन्द्र बिस्मिल पर गीत सुनाया। हरीओम् शास्त्री ने यज्ञ का काम सम्भालने की जिम्मेवारी ली तथा उपस्थित निम्नलिखित धर्मप्रेमियों ने पूर्ण सहयोग तथा समाज को चलाने की जिम्मेवारी ली तथा आगे के कार्यक्रम भी घोषित किये। 3 मई 2014 को ईश्वरसिंह सदस्य पंचायत के घर पर तथा 14 मई 2014 को समाजसेवक व बहुत ही सकारात्मक विचारों वाले श्री रामकिशन मण्डौरा के घर पर निश्चित किया तथा बाकी सभी ने भी पूरा भरोसा दिलाया कि हम यह क्रम टूटने नहीं देंगे तथा आर्यसमाज का कार्य आगे बढ़ायेंगे। अन्त में डॉ० दलेलसिंह वी.सी., सो.पी.जे. एस. यूनि० जिला चूरू (राज०) सदस्य एक्सप्रैट कमेटी N.S.I. कानपुर, सीनियर वाइस प्रेसीडेंट ऑफ ऑल इण्डिया फैडरेशन ऑफ एजुकेशन (A.I.F.E.A.) ने शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद दिया।

इस परोपकार के कार्य में निम्नलिखित मण्डौरा वासी शामिल हुए तथा सभी ने त्याग व सेवा भावना से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया तथा विद्यालंकार के आह्वान पर अपनी छोटी-छोटी बुराइयों को, जो प्रत्येक मनुष्य में कोई न कोई होती है, छोड़ने का संकल्प लिया। श्री सुखवीर सिंह दहिया एस.डी.ओ. रिटायर्ड, श्री सुखवीर सिंह दहिया सेवानिवृत्त नेवी, श्री जयसिंह दहिया रिटायर्ड डायरेक्टर आदि ने भाग लिया।

महर्षि दयानन्द का विश्व के लोगों.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

वेदविद्या के नेत्र से सारे विश्व में से अन्धकार दूर होकर प्रकाश फैल जाएगा। महर्षि ने इसीलिए कहा कि यदि उन्नति चाहते हो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार करें, क्योंकि बिना वेद विद्या के अज्ञानता, अन्धकार का मिटना संभव नहीं है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज को वह वस्तु दी जो किसी अन्य के पास नहीं है और जो वस्तु आर्यसमाज के पास है, उसी से मानव जाति का कल्याण हो सकता है, अन्य से नहीं। वह वस्तु क्या है? वेद, शास्त्र, उपनिषद् आदि-आदि।

वेद क्या कहता है? मनुर्भव-मनुष्य बन और मनुष्य बनने के साधन भी बतलाये—**ज्योतिष्मत: पथो रक्ष धिया कृतान**। निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान कर, अर्थात् तेरे कर्म ज्ञानपूर्वक, विचार पूर्वक होने चाहियें। वेद ने ज्ञानपूर्वक बुद्धि से विचार कर सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, ठीक-गलत, लाभ-हानि, अच्छा-बुरा आदि का विचार कर कर्म करने को कहा है। जब मनुष्य बुद्धि से विचार नहीं करता तभी अंधविश्वास में फँस जाता है। वह कैसे? देख रहा है पत्थर की मूर्ति है फिर भी उसे भगवान मान रहा है। जानता है पत्थर की मूर्ति खा नहीं सकती, फिर भी खिला रहा है। जानता है इसके पास देने को कुछ नहीं, फिर भी उसी से मांग रहा है। यह भी मालूम है कि यह अपनी भी रक्षा नहीं कर सकती, चोर चुरा ले जाते हैं फिर भी उसी से रक्षा की गुहार लगा रहा है। ऐसे ही निर्बुद्धियों ने तो सोमनाथ के मन्दिर का खजाना लुटवा दिया था।

महर्षि दयानन्द ने विश्व को यही तो सन्देश दिया था कि ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को जानो और अपने कर्मों को सुधारो। सब पाप-पुण्य का फल मिलता है। इस भरम को छोड़ दो कि ये मूर्तियां, गंगा-स्नान, तीर्थयात्रा आदि से पाप धुल या कट जायेंगे। सब भोगने पड़ेंगे और पूरा सत्य जानना है तो आर्यसमाज में विद्वानों के प्रवचन सुना करो, नहीं तो दुष्कर्मों में फँसे रहोगे। अपना व परिवार का कभी कल्याण न कर पाओगे।

आर्यसमाज द्वारा सतरोल खाप के सुधारवादी कदम का समर्थन

रोहतक। दिनांक 23.04.2014 को पूर्व कर्मचारी नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्वमन्त्री सत्यवीर शास्त्री ने सतरोल खाप के गांव, गोत्र, सीमावर्ती गांव तथा जातीय बन्धन तोड़कर विवाह के फैसले को साहसिक व प्रशंसनीय कदम बताया है।

श्री शास्त्री ने प्रेस-वक्तव्य में कहा कि किसी राष्ट्र, समाज व देश में अनेक जातियां तथा अनेक धर्म उस राष्ट्र व समाज को तोड़ने का कारण बन जाते हैं। जिस प्रकार से 1947 में भारत माँ को दो टुकड़ों में बाँट दिया और शहीदे आजम भगतसिंह के चाचा अजीतसिंह जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपनी जवानी के लगभग 40 वर्ष अनेक कष्टों सहित विदेशों में बिताये उन्होंने यह कहकर प्राण त्याग दिये कि कोई भी मातृभक्त अपनी माँ के टुकड़े नहीं देख सकता।

अत: सतरोल खाप का यह कदम जहाँ साहसिक व प्रसंशसनीय है वहाँ यह राष्ट्रहित में भी है। वास्तव में सतरोल खाप का यह कदम आर्यसमाज की विजय का ही कदम है, क्योंकि आर्यसमाज आरम्भ से ही राष्ट्र में नहीं सम्पूर्ण विश्व में छुआछूत, जातिप्रथा व कीट-पतंगों के समान फैलते मत-मतान्तरों का विरोध करता आ रहा है। उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा समस्त खाप पंचायतों से अपील करती है कि वे सतरोल खाप के राष्ट्रहित व सामाजिक सुधार के कार्य का समर्थन करे। जिससे जाति बन्धन समाप्त होकर राष्ट्र एक सूत्र बन्धे तथा रिश्ते, नातों में कोई रुकावट पैदा न हो। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सभी धर्मों के गुरुओं से भी अपील की है कि सभी धर्मगुरु इकट्ठे होकर राष्ट्रहित में सभी धर्मों की श्रेष्ठ परम्पराओं को लेकर एक ही धर्म की स्थापना करें, क्योंकि शास्त्रों में कहा कि '**धारणात् धर्म**' जो श्रेष्ठ परम्परायें मनुष्य ने अपनानी चाहिये, धारण करनी चाहिये उसे ही धर्म कहा गया है। महाराज मनु ने धर्म के लक्षण बताते हुए कहा कि—

धृति-क्षमा-दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिय-निग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म-लक्षणम्॥

धैर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करना, क्षमाशील होना, मन को वश में रखकर चोरी आदि से बचना, मन, वचन, कर्म से पवित्र रहना, पांचों ज्ञानेन्द्रियों को बुराई से दूर रखकर वश में रखना, बुद्धि व विद्या की वृद्धि करना, सत्य बोलना, अकारण क्रोध न करना ये दश धर्म के लक्षण है।

निम्न श्रेष्ठ गुणों के अतिरिक्त अन्य श्रेष्ठ गुणों को भी मिलाया जा सकता है। अत: सभी विद्वान् धर्मगुरुओं ने मिलकर एक सर्वमान्य धर्म की स्थापना कर कण-कण में वास करने वाले ईश्वर की ही आराधना करनी चाहिये जिसके कारण हमारा राष्ट्र संगठित होकर शक्तिशाली बन सके।

—सत्यवीर शास्त्री, पूर्वमन्त्री,
आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा,
दयानन्दमठ, रोहतक

वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के **95वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह** का आयोजन **दिनांक 11 मई 2014, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : **प्रो. ओमकुमार आर्य,**
उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

कार्यक्रम-11 मई 2014 प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक

यज्ञ, भजन, प्रवचन

निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

thearyasamaj.org

गुजरात के साम्प्रदायिक उपद्रव

❑ डॉ॰ शशिकान्त गर्ग

भाजपा को लोकसभा के चुनावों में नीचा दिखाने के लिए अन्य राजनीतिक दल बार-बार गुजरात के सन् 2002 के साम्प्रदायिक उपद्रवों की चर्चा कर रहे हैं, इस संबंध में कुछ प्रश्न इस प्रकार उपस्थित होते हैं—

(1) अतीत में एक व्यक्ति की हत्या के बाद 5 हजार लोगों की हत्या को स्वाभाविक बताने के लिए कहा गया था कि बड़ा पेड़ गिरने से जमीन हिलती ही है, तो क्या 64 निर्दोष लोगों को जिन्दा जलाने से उपजे गुस्से में उपद्रव हो जाना स्वाभाविक नहीं था?

(2) इन्दिरा जी की भाँति डॉ॰ श्यामाप्रसाद मुखर्जी भी बड़े वृक्ष ही थे, उनकी रहस्यमय मृत्यु के बाद तो उनके अनुयायियों ने किसी को थप्पड़ भी नहीं दिखाया था, तो इन्दिरा जी के अनुयायियों ने इतने लोगों की हत्या क्यों की?

(3) गुजरात के हिन्दुओं को तो इस बात का गुस्सा था कि 64 निर्दोष लोगों को गोधरा रेलवे स्टेशन पर जिन्दा जलाया था, परन्तु गोधरा के हत्यारों को किस बात का गुस्सा था, कोई तो बताओ?

(4) गुजरात में उपद्रव गोधरा कांड के कारण हुए थे। उपद्रवों के कारण को छुपाकर हिन्दुओं को बदनाम करने के लिए केवल परिणाम की चर्चा करना अन्याय है।

(5) कांग्रेस वोटों के लिए हिन्दुओं को बदनाम करना कब छोड़ेगी?

संपर्क-152/2, अहीरवाड़ा, कुंदन कालोनी, बल्लबगढ़, फरीदाबाद

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज गोकर्ण मार्ग, रूपनगर, रोहतक नगर द्वारा वैदिक धर्म प्रचार कार्य के लिए समय-समय पर अनेक कार्यक्रम किए जाते हैं। इसी शृंखला में इस समाज का स्थापना दिवस वैशाख शुक्ला द्वादशी, संवत् 2071 तदनुसार 9 से 11 मई 2014 तक अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर मुम्बई से आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ॰ सोमदेव शास्त्री जी के हृदयग्राही व्याख्यान तथा सहारनपुर से प्रसिद्ध युवा भजनोपदेशक कोकिलकंठ पं॰ सुमित्रदेव जी की मधुरवाणी में मनोहर भजन सुनने को मिलेंगे। सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि इष्टमित्रों व परिवार जनों के साथ पधारकर कार्यक्रम का लाभ उठायें।

निवेदक
समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण
आर्यसमाज, गोकर्ण मार्ग, रूपनगर, रोहतक
सम्पर्क सूत्र : 9466749992-93

वैदिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं चरित्र निर्माण का संगम
भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात (गुड़गांव)

प्रवेश सूचना सत्र 2014

मार्च 20 से प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल जसात (गुड़गांव) ने अल्पकाल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवं व्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के भव्य एवं आधुनिक भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सत्संग भवन, यज्ञशाला, अतिथिशाला, भोजनालय एवं कम्प्यूटर कक्ष आदि के पृथक्-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण भवन सुशोभित है। गुरुकुल में आपको प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य छात्राओं में दृष्टिगोचर होगा। अपनी कन्याओं के सर्वांगीण विकास हेतु गुरुकुल कार्यालय से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र : 9416188854, 9813083584

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार हुए 'उत्तराखण्ड रत्न' से सम्मानित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल श्री के.एम. सेठ एवं उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस श्री राजेश टंडन से 'उत्तराखण्ड रत्न' सम्मान प्राप्त करते हुए।

'आल इंडिया कांफ्रेस ऑफ इंटेलक्चुअल्स' नामक बुद्धिजीवियों की संस्था की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को **'उत्तराखण्ड रत्न'** से सम्मानित किया गया। रविवार दिनांक 20.04.2014 को बड़ोवाला देहरादून में आर.के. इंडिया ग्रांट स्थित एक होटल में आयोजित किये गये एक विशेष कार्यक्रम में कुलपति को **'धर्म एवं संस्कृति'** के क्षेत्र में तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में उल्लेखनीय प्रगति एवं समाज सेवा के लिए विशिष्ट कार्य करने पर यह सम्मान दिया गया। इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार को माल्यार्पण के अतिरिक्त अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह तथा एक प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित करने वाली हस्तियां थीं—छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल श्री के.एम. सेठ, उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस श्री राजेश टंडन, डॉ. एस. फारूख देहरादून आदि। संस्था के सह-अध्यक्ष आर.सी. दीक्षित पूर्व डी.जी.पी. (पुलिस) तथा राष्ट्रीय सैकेट्री जनरल पी.एन. शर्मा, सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट का कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा। इस एन.जी.ओ. के अध्यक्ष श्री जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति (पूर्व चुनाव आयुक्त) हैं।

उल्लेखनीय है कि कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार का आर्यसमाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के अतिरिक्त 'मनुस्मृति' पर विशिष्ट कार्य है। उन्होंने मनुस्मृति की प्रासंगिकता तथा महत्ता पर विशिष्ट कार्य कर समाज को यह संदेश दिया है कि मनुस्मृति ही एक ऐसा ग्रन्थ है जो सामाजिक समरसता तथा सामाजिक सुदृढ़ न्याय व्यवस्था को बताता है। उन्होंने मनु तथा मनुस्मृति पर हुए एक अनेक संदेहास्पद तथा प्रहारात्मक विवादों को सरलता से सुलझाया है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने वैदिक धर्म एवं संस्कृति पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। व्याख्यानों तथा टी.वी. वार्ताओं के माध्यम से भी उन्होंने मनुस्मृति-समीक्षा की है तथा स्वामी दयानन्द एवं स्वामी श्रद्धानन्द के कृत्कार्यों की महत्ता को उजागर किया है। देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में बैंगलोर से आए सीनियर एडवोकेट शिव शेखरन, लखनऊ के एस.के. गर्ग, मुरादाबाद के डॉ. ए.के. सिंह, एम्स के डॉ. राजकुमार, सीनियर एडवोकेट सुभाष माहेश्वरी, ए.के. शर्मा, पी.के. जैन, एच.एन. शर्मा, ए.के. अग्रवाल, डी.डी. शर्मा, बाबूराम बालियान, हेमन्त अरोड़ा, करण मल्होत्रा, एस.के. शर्मा तथा अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।
—आचार्य बलदेव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा॰ रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।